हिन्दी हैं हम

बाल साहित्य की भूमिका, भाषा सिखाने के लिए ही नहीं बल्कि भाषा को और समृद्ध करने के साथ-साथ दुनिया को और बेहतर तरीके से समझने की भी रही है। एन.सी.एफ 2005 में पुस्तकालय की भूमिका को भाषा सिखाने और सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में स्वीकारा गया है।

– स्वाती कश्यप

साहिर छठी क्लास में चला गया है। जिस विषय में उसे सबसे कम नंबर मिले हैं वह है हिन्दी। वह पहले ही घोषणा कर चुका है कि हिन्दी में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है। कई बार हमसे पूछ चुका है कि आखिर और कितने दिनों तक उसे शुद्ध हिन्दी पढ़ना और लिखना है!

शुरुआत ऐसी न थी। उसने मात्र दो महीने में हिन्दी पढ़ना और लिखना सीखा था। कहानियों की किताबें लेकर खेलता और फिर पढ़ने की कोशिश करता। हमारे पास भी किताब लेकर आता और कहता 'सुनाओ।

जब वह लगभग तीन साढ़े तीन साल का था तब उसने एक तुकबंदी बनाई थी

'माचिस जली ठक
चूल्हा जला भक'

पांच साल की उमर में उसने एक कविता बनाई थी। कविता से कुछ पंक्तियां हैं–

'पेड़ अच्छे होते हैं
सबको कुछ –कुछ देते हैं
अच्छे पेड़ प्यारे पेड़
लोगों से प्यार करते हैं
प्यार लेकर लोगों से पेड़ प्यार करते हैं'

जैसे–जैसे उसका स्कूल से वास्ता बढ़ा उसका 'हिन्दी' भाषा से प्रेम कम होने लगा। तत्सम–तद्भव, देशज–विदेशज, शुद्धता–अशुद्धता के बोझ तले उसकी अपनी भाषा दबने लगी। कई कारणों से हमने उसका स्कूल कई बार बदला। ज्यादातर स्कूलों में 'हिन्दी' और 'हिन्दी' मैम के साथ साहिर की संघर्ष की स्थिति बनी रही। तीन साल पहले जिस स्कूल में था वहां की हिन्दी मैडम ने 'वृक्ष' पर एक लेख लिखने को दिया था। साहिर ने दिल लगाकर लिखा। उसमें उसने कई तरह की बातें लिखीं, जैसे, पेड़ पर चिड़िया का घर होता है, पेड़ सबको

चित्रांकन– अनुप्रिया

ठंडी हवा देते हैं। पेड़ में हरे–हरे पत्ते होते हैं। ऐसे ही कुछ 8–10 वाक्य रहे होंगे। उसका हर वाक्य 'पेड़' से शुरू होता था। शिक्षिका महोदया ने सभी पेड़ को एक बड़े से लाल घेरे में डाल दिया और बगल में लिख दिया 'वृक्ष।

उसी दौरान पुस्तकालय पर भी एक लेख लिखने को दिया गया था। साहिर ने कुछ ऐसा लिखा था।' हमारे स्कूल में एक पुस्तकालय था। उसमें बहुत सी किताबें थीं। हम वहां जो चाहें सो किताब पढ़ सकते थे। अब कुछ महीनों से पुस्तकालय की क्लास नहीं होती। वहां कंप्यूटर रूम बन गया है। काश! वह पुस्तकालय फिर से आ जाए!'

शिक्षिका ने उसे काटकर एक शानदार लेख लिखवाया

जो कुछ ऐसा था– हमारे विद्यालय में एक शानदार पुस्तकालय है। यह शानदार पुस्तकों से भरा है। पुस्तकें ज्ञान का रास्ता दिखाती हैं। यह हमें हार्दिक प्रसन्नता देता है... वगैरह वगैरह!

हम साहिर की कॉपी लेकर प्रिंसिपल से मिलने गए। प्रिंसिपल ने हमारी बात अच्छे से सुनी और फिर एक जबरदस्त नियम बनाया– प्रिंसिपल के कमरे तक पहुँचने के लिए कोई बड़ी वजह या जटिल मामला चाहिए अन्यथा अभिभावक स्कूल गेट के बाहर खड़े रहें।

साहिर का मन हिन्दी पढ़ने से उचटता जा रहा था। हिन्दी की कॉपी शिकायतों से भरी रहती– 'गृह कार्य पूरा करें। कृपया अपनी लिखावट सुधारें। कार्य अधूरा है. ध्यान से लिखें।' बाकी विषयों में उतनी शिकायतें नहीं होतीं।

घर पर हमने कुछ कोशिश की कि उसका मन इस भाषा से डरे नहीं। नहीं! वह डरता कहां था! जो भाषा वह किताब में पढ़ रहा था उसका उसके जीवन में कोई इस्तेमाल नहीं था। जो वह लिखता शिक्षिका महोदया की नजर में उसका कोई स्थान न था। किसी भी तरह से खुद को व्यक्त करने का मौका नहीं था– न बोलकर, न लिखकर। ऊपर से 'व्याकरण' की जटिलताएं।

घर पर वह कहानियों की किताबें पढ़ता, हिन्दी में भी और अंग्रेजी में भी। शब्दों के साथ वह खेलता। कभी–कभी मैं उसे कुछ शब्द देती और वह झटपट एक छोटी–मोटी कविता बना देता। फिर वह मुझे भी कुछ शब्द देता और मुझे भी कविता बनाने की कोशिश करनी पड़ती हालांकि कविता बनाना मेरे किसी हाथ का खेल नहीं।

साहिर जब तीसरी क्लास में था तब ऐसे ही खेलते हुए हमने कुछ कविताएं बनाई थीं।

चुलबुला

बच्चा था एक चुलबुला
नाम था उसका बुलबुला
थे उसके एक भइया
नाम था उनका भुरभुरा
छोटा बुलबुला गिर पड़ा
भइया भुरभुरा हँस पड़ा

पापा जी

एक हमारे दादा जी हैं
एक हमारे नानाजी
चाचा मामा बहुत बहुत हैं
लेकिन रहते दूर बहुत हैं
पापा जी हैं पास हमारे
करते नाटक वे कई सारे

होली

लेकर आई होली
कई बच्चों की टोली
एक लड़की बोली
फेंको रंगों की गोली
साथ में गुब्बारों की झोली!

हाय-हाय

जब कोई पूछे, 'क्या हाल'
मम्मा बोले, 'हाय मेरे बाल,
झड़ते जाते वे हर साल'
हाल पूछना बन जाता काल!
साहिर बोले, 'बालों का जाल' !

मात

मम्मा बाबा और साहिर रहते साथ
घूमने जाते ले हाथों में हाथ
करते रहते खूब बात ही बात
अगर कोई अड़ाता उनकी बातों में लात
दे देते वे हर लात को मात !

घर पर और स्कूल में दो अलग–अलग तरह की कोशिशें चल रही थीं। पांचवी क्लास में संयोग ऐसा हुआ कि क्लास टीचर हिन्दी की टीचर थीं। उन्हें भी साहिर से बहुत शिकायतें रहीं।' बहुत स्लो है। लिखता ही नहीं है। लिखावट बहुत खराब है। इसकी कॉपी उठाकर देख लीजिए कुछ करता ही नहीं है। ये सभी बातें वे कई अभिभावकों के सामने तब बोल रही थीं जब उनका और हमारा पहला आमना–सामना था। हम तो अभी कुर्सी पर आधे ही बैठे थे। साहिर का चेहरा उतर गया था।

स्कूल के आखिरी दिन कुछ बच्चे हिन्दी मैम के चरण स्पर्श कर रहे थे। मैम भी भावुक हो रही थीं और उन बच्चों को आशीर्वाद दे रही थीं। साहिर और मैं भी वहीं पर थे। साहिर अपना फोल्डर उठा चुका था और न जाने किस उम्मीद में वहीं पर खड़ा था। हमें एक और मैडम से मिलना था सो हम दूसरी क्लास में जाने के लिए मुड़

गए। शर्मिला मैम चौथी क्लास में साहिर और बाकी बच्चों को सोशल साइंस पढ़ाती थीं। पांचवी में उन्होंने अंग्रेजी पढ़ाई थी।

शर्मिला मैम अपनी क्लास के बच्चों में मसरूफ थीं। हम दरवाजे के बाहर से कनखियों से उन्हें देख रहे थे। मैम की नजर पड़ी और मुस्कुराकर उन्होंने पुकारा, 'साहिर, हम भागते हुए उनके पास पहुंचे। शर्मिला मैम भी जान रही थीं कि आज हमें उस स्कूल से विदा लेना था। वे बोलीं, सभी अभिभावकों के बीच में बोलीं, 'हमको तुम पर बहुत भरोसा है साहिर। तुम जरूर बहुत अच्छा करोगे। फिर एक बच्चे के पिता की ओर मुड़कर बोलीं, इसके जवाब एकदम अलग से होते हैं। ये कुछ अलग करेगा। मैं मैम का चेहरा देख रही थी। कितनी खुशी थी उनके चेहरे पर।

मेरी आंखें भर आईं। मैंने साहिर को देखा। उसकी आंखें भी नम थीं। हम शर्मिला मैम को इतना ही कह पाए, 'आपको फोन करेंगे। फिर सीढ़ियों से दौड़ते हुए नीचे की तरफ भागे। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था मानो हम दौड़ नहीं, उड़ रहे हों। शर्मिला मैम ने हमें पंख दे दिए थे हमेशा के लिए!

सोच रही हूं, एक ही स्कूल की दो टीचर के अलग तरह के कमेंट आए। उनका असर कितना अलग है! साहिर के लिए आखिर हिन्दी इतनी पराई कैसे हो गई? जिसे बोलता हुआ वह बड़ा हो रहा है, समय–समय पर जिसमें उसने शब्दों की कलाकारी दिखाई वही उसके लिए अब बोझिल कैसे हो गई?

जरा सोचिए कि स्कूलों में, कॉलेजों में, सरकारी दफ्तरों में, न्यायालयों में, जहां भी 'अतिवादी' हिन्दी है वह बदलाव के नूर से रौशन हो गई है। उस 'हिन्दी' में ये सारे काम काज हो रहे हैं जो हमारी बोलचाल की भाषा है, जो बगैर 'कोश' समझी जाती है और जो लोगों के दिलों तक बड़ी आसानी से पहुंच जाती है।

मैं स्कूलों में बच्चियों और बच्चों के मुस्कुराते चेहरों को देख पा रही हूं। उनके खिलखिलाते शब्दों को सुन पा रही हूं। आप भी इन 'शब्दकारों' के गीत सुन पा रहे हैं न! जब यह लिख रही हूं तब मेरे कानों में वे सारे शब्द गूंज रहे हैं जो साहिर खनकाता रहता है!

(लेखिका शैक्षिक संस्थाओं के साथ जुड़कर स्वतंत्र लेखन व गतिविधियां करती है वह पटना, बिहार की रहने वाली हैं)

शिक्षक सृजन

पूनम पासवान, कक्षा–5, राजकीय प्राथमिक विद्यालय पंडितवाड़ी, सहसपुर, देहरादून

मथनी ओर भगोना

हमने सुना एक शब्द अजीब
जब दादी ने माँ से बोला
जल्दी दे दो मथनी और भगोना
दही है मुझे बिलोना।
बच्चा पार्टी भी बोली–
दादी अर्थ तो समझाओ
इस बिलोने से हमें भी मिलाओ।
दादी ने किया एक्शन
सामने रख दिये कई बरतन
एक मथनी और एक भगोना।
हथेलियों के बीच मथनी नाच–नाच
दही से मक्खन अलग कर रही थी।
पर मम्मी कहाँ बिलोती है
वो तो मिक्सी चलाती हैं
घर्र घर्र घर्र घर।

चक्की रानी

मैंने मोहल्ले की एक दुकान में देखा
शोर मचाता बिना दाँत दिखाता राक्षस
गोल–चौकोर सा लिए मुँह
दाँत छुपाए अंदर
बड़ी सी नाक लिए
मटक कर नाच दिखाता है।
दुकान वाले भैया ने डाले गेहूं के दाने
जल्दी– जल्दी लगा उसे चबाने
तब मेरी समझ में आया
जो भी उसने मुंह में डाला
चकनाचूर उसने कर डाला।

– ऋचा रथ

बी–6 सेल्स टेक्स कॉलोनी, शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़